महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर

कला स्नातक (संस्कृत)

अर्द्धसत्रानुसारी

पाठ्यक्रम

BACHELOR OF ARTS (SANSKRIT)

SEMESTER SYSTEM

SYLLABUS

शिक्षा-सत्र : 2024-2025

✍ निर्मिति ✍

संस्कृत–अध्ययन–मण्डल

पुरोवाक्

श्रीमद्भगवद्गीता में कहा गया है कि संसार में ज्ञान के समान पवित्र कुछ भी नहीं है – "नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।" अतीत में जब इस भारतवर्ष में तक्षशिला, नालन्दा, वल्लभी, विक्रमशिला जैसे विद्यातीर्थकल्प ज्ञान-केन्द्र थे, तो यह राष्ट्र जगद्गुरुत्व के वैभव से मण्डित था और तब कोई आचार्य अनायास यह गर्वोक्ति कर सकता था कि विश्वभर से लोग यहाँ आएँ और हमसे सीखें – 'स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।' किञ्च, यह केवल हमारी आत्मप्रशस्ति न थी, बल्कि मेगस्थनीज़, फाह्यान, ह्वेनसांग, इत्सिंग, इब्नबतूता इत्यादि विदेशी लेखकों ने भी हमारी शिक्षा-व्यवस्था का मुक्तकण्ठ से यशोगान किया है। किन्तु, विदेशी दासता के सुदीर्घ दौर में हमारे स्वत्व का दलन हुआ, आत्म-विस्मरण हुआ, स्वाभिमान का क्षरण हुआ और शनैः शनैः हमारा वह शिक्षा-गौरव भी धूसर होता चला गया। उस विस्मृत-विगलित-विलुप्त शिक्षा-गौरव की पुनः प्रतिष्ठा करना वर्तमान समय की एक बड़ी चुनौती हमारे समक्ष है। स्वातन्त्र्य के पश्चात् भी सुदीर्घ काल तक हमारी शिक्षा-प्रणाली आलोचना का विषय रही। हिन्दी के प्रसिद्ध व्यंग्यकार श्रीलाल शुक्ल ने 1970 में प्रकाशित अपने प्रसिद्ध उपन्यास 'राग दरबारी' में एक जगह लिखा कि "भारतीय शिक्षा-पद्धति सड़क पर पड़ी कुतिया के समान है, जिसे कोई भी ठोकर मारकर चला जाता है।" शैक्षिक गोष्ठियों में, विद्वच्चर्चाओं में, अकादमिक बहस-मुबाहिसों में, राजनीतिक भाषणों में, अख़बारों के सम्पादकीय पन्नों में, पत्र-पत्रिकाओं के लेखों में सब कोई इस शिक्षा-प्रणाली की निन्दा करते रहे, मज़म्मत करते रहे, इसे गरियाते रहे, किन्तु कभी उसमें आमूल परिवर्तन नहीं हो सका।1986 की शिक्षा-नीति के बाद के काल में तो इस विषय में विशेष कोई प्रयास ही नहीं हुए।

परन्तु, अब लगभग तीन दशकों के बाद, इस विषय में व्यापक विमर्श (जिसमें 2 वर्ष का समय और 2 करोड़ से अधिक हितधारकों के सुझाव समाहित हैं) के पश्चात् सर्वव्यापी-सर्वस्पर्शी-सर्वसमावेशी राष्ट्रीय शिक्षा-नीति 2020 आई है, जो राष्ट्रीय विचारों से ओतप्रोत होने के कारण वास्तविक अर्थ में 'राष्ट्रीय' शिक्षा-नीति है और वैश्विक स्तर पर जिसकी प्रशंसा हो रही है। इस शिक्षा-नीति में ज्ञानाधारित सर्जनात्मकता व रचनात्मकता के साथ प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्चतर शिक्षा का ख़ाका है। इस नीति में न केवल शिक्षा के अप्रासंगिक और कालबाह्य ढाँचे को आमूल-चूल बदला गया है, अपितु शिक्षा में नवोन्मेष, नवाचार व नवानुसन्धान के साथ मनुष्य-निर्माण पर बल दिया गया है। यह नीति पूर्णतः भारत-केन्द्रित और विद्यार्थि-केन्द्रित है तथा अतीव समृद्ध प्राचीन भारतीय ज्ञान-कोष की महत्ता को रेखाङ्कित करती है।

यह मातृभाषाओं और हिन्दी-संस्कृत समेत समस्त भारतीय भाषाओं के महत्त्व को स्वीकार करती है। संस्कृत के विषय में इस शिक्षानीति से जो आश्वासन मिला है, उससे भारतीय संविधान की आत्मा को भी तोष होगा। मातृभाषाओं में प्राथमिक शिक्षा और भारतीय भाषाओं में सर्वविध शिक्षा, यह अब तक भारतीय-भाषाभिमानियों के लिए एक स्वप्न था। किन्तु अब अनेक स्थानों पर चिकित्सा व अभियान्त्रिकी आदि की शिक्षा भी भारतीय भाषाओं में उपलब्ध करवाने के प्रयास चल रहे हैं –

पाठ्यक्रम बन रहे हैं, तकनीकी शब्दावली का निर्माण हो रहा है, पुस्तक-लेखन हो रहा है। "...भारतीय भाषाओं में प्रवीणता को रोज़गार-अर्हता के मानदण्डों के एक हिस्से के तौर पर शामिल किया जाएगा" – यह राष्ट्रीय शिक्षा-नीति 2020 के भाषाओं पर केन्द्रित अध्याय 22 का अन्तिम वाक्य है। यह अकेला संकल्प ही अगर सत्यनिष्ठा से लागू कर दिया गया, तो हमारी संकटापन्न भाषाएँ फिर से जी उठेंगी।

वस्तुतः यह नीति छात्र, शिक्षक व भाषा के बीच का त्रिकोण है। इसका मुख्य उद्दिष्ट 'वाइब्रेंट नॉलेज सोसायटी' का निर्माण, उच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, मानवीय व राष्ट्रीय भाव का जागरण, सत्परम्परा के संरक्षण के साथ वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास और अन्तिम छोर पर विद्यमान व्यक्ति तक शिक्षा का उजास पहुँचाना है। 'नेशन फ़र्स्ट, कैरेक्टर मस्ट' यह इस शिक्षानीति का सूत्र-वाक्य है।

राष्ट्रीय शिक्षानीति का एक वैशिष्ट्य है – CBCS यानी 'विकल्पाधारित श्रेयाङ्क प्रणाली' (Choice Based Credit System)। पहली बार विषय-चयन की सीमाओं को तोड़ते हुए उसमें लचीलापन दिया गया है और शिक्षा-क्षेत्र में बहुविषयक (Multidisciplinary)और अन्तरानुशासनिक (Cross-disciplinary) अध्ययन के द्वार खुल रहे हैं। अब छात्र अपनी रुचि, मति और गति के अनुसार विषय-चयन कर सकेंगे। कितना अच्छा होगा जब भौतिकशास्त्र का छात्र संस्कृत पढ़ सकेगा, संस्कृत का छात्र भी विज्ञान, वाणिज्यादि के विषय का चयन कर सकेगा और इसी तरह सर्वत्र एक अनुशासन में वर्तन करते हुए भी दूसरे अनुशासन में संक्रान्ति संभव होगी। इसी प्रकार अब छात्र एक उच्च शिक्षा-संस्थान से दूसरे संस्थान में संक्रमण कर सकेंगे। अब यदि किसी छात्र को त्रिवर्षीय स्नातक करते हुए एक या दो वर्ष का अध्ययन पूर्ण करके किसी कारण से अध्ययन बीच में छोड़ना पड़ गया, तो इस नई व्यवस्था में उसका पीछे का कृत श्रम व्यर्थ नहीं जाएगा, जैसा कि कर्मयोग के सन्दर्भ में श्रीमदभगवद्गीता में कहा गया है – 'नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते।' जितना कर लिया, उसका लाभ दो तरह से मिलेगा। एक तो इस दौरान उसके द्वारा अर्जित श्रेयाङ्क (क्रेडिट) 'एकेडेमिक क्रेडिट बैंक' में जमा हो जाएँगे और यदि वह छात्र एक निश्चित समयावधि में अपनी डिग्री पूरी करने के लिए वापस आ जाता है, तो बैंक में जमा ये क्रेडिट उसकी डिग्री में जुड़ जाएँगे (यहाँ उल्लेखनीय है कि विश्वविद्यालय के द्वारा छात्रों की एबीसी (Academic Bank Of Credit) आईडी बनवाने की प्रक्रिया पहले ही शुरू की जा चुकी है)। किसी अकादमिक कार्यक्रम से जुड़ने और उसे छोडने की यह लचीली व्यवस्था 'बहुविध प्रवेश तथा निकास' – Multiple Entry and Multiple Exit (MEME) कहलाएगी। साथ ही, स्नातक कार्यक्रम का केवल प्रथम वर्ष पूर्ण करने वाले छात्र को 'सर्टिफिकेट' तथा द्वितीय वर्ष पूर्ण करने वाले छात्र को 'डिप्लोमा' प्रदान किया जाएगा, ऐसी योजना है।

अन्तर्निहित सामर्थ्य की अभिव्यक्ति ही शिक्षा का वास्तविक लक्ष्य है, किन्तु उसके लिए लक्ष्याभिमुख सात्विक श्रम चाहिये, तपस् चाहिये। शास्त्र कहता है कि तपस् से ही सिद्धि मिलती है, तपस् ही प्रत्येक साधन का मूल है – 'तपोमूलं हि साधनम्।' हमें भी अपने तपस् (Academic Rigour) से शिक्षा के लक्ष्य को अधिगत करना है। 'सा विद्या या विमुक्तये' – यह विद्या का वास्तविक लक्षण है, किन्तु आज का युगधर्म यह है कि हमें परा और अपरा दोनों

विद्या चाहिए, निःश्रेयस् (पारमार्थिक उन्नति) और अभ्युदय (लौकिक उन्नति) दोनों को देने वाली शिक्षा चाहिए, विद्या श्रेयस्करी के साथ अर्थकरी भी चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा-नीति का भी यह मन्तव्य है। हमें अपने संस्थानों और पाठ्यचर्या को तदनुकूल बनाना है। हमें उपनिषद् की उस चतुरङ्गिणी विद्या-संहिता का भी सदा स्मरण रखना है कि – आचार्य पूर्वरूप है, शिष्य उत्तररूप है, दोनों की सन्धि (संयोग से) विद्या प्राप्त होती है और प्रवचन (अध्यापन) ही आचार्य और शिष्य के बीच की योजक कड़ी है – 'आचार्यः पूर्वरूपम्, अन्तेवास्युत्तररूपम्, विद्या सन्धिः, प्रवचनं सन्धानम्।'

अतः प्रवचन के विषय-स्वरूप-मात्रादि का निर्धारण भी आवश्यक है। पाठ्यचर्या का निर्माण उसी आवश्यकता की पूर्ति का एक उपकरण है। शिक्षा-निकाय आचार्य-केन्द्रित (Teacher-centric) हों, आचार्य शिष्य-केन्द्रित (Disciple-centric) रहें, आचार्य और शिष्य की युति अध्ययन-केन्द्रित (Learning-centric) हो तथा अध्ययन आनन्द-केन्द्रित (Pleasure-centric) हो। इस चतुष्पदी व्यवस्था (Tetrapody) के निर्माण के लिए भी उद्देश्यपूर्ण, सर्वाङ्गपूर्ण, सन्तुलित व तर्कसंगत, मूल्याधारित, भारतीय ज्ञानपरम्परामूलक, रोचक, जीवनोपयोगी और भविष्योन्मुखी पाठ्यक्रम अपेक्षित है।

अस्तु, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, 'उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए यूजीसी गुणवत्ता अधिदेश-2021' तथा CURRICULUM AND CREDIT FRAMEWORK FOR UNDERGRADUATE PROGRAMMES (UGC) इत्यादि के अनुरूप महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर कार्यक्रमों के पाठ्यक्रम की भी पुनारचना अपेक्षित थी। उसी सन्दर्भ में त्रिवर्षीय कला-स्नातक (संस्कृत) का यह षाण्मासिक-अर्द्धसत्रानुसारी, संशोधित, परिष्कृत पाठ्यक्रम (परीक्षा-योजनादि के साथ) प्रस्तुत है।

✍ अस्वीकरण ✍

(Disclaimer)

पाठ्यक्रम को अकादमिक परिषद् और प्रबन्धन बोर्ड द्वारा अनुमोदित किया गया है। किसी भी पृच्छा के लिए कृपया संबन्धित सङ्काय से संपर्क करें।

कला स्नातक (संस्कृत)

अर्द्धसत्रानुसारी

कार्यक्रम-संरचना

BACHELOR OF ARTS (SANSKRIT)

SEMESTER SYSTEM

STRUCTURE OF PROGRAMME

सत्र 2024-2025

प्रथमार्द्धसत्र - SEMESTER-I							
Course Code	**Course Type**	**Course Title**	**Level**	**Credits**	**Marks (Ext.+Int.)**	**Minimum Passing Marks (%)**	**Hours in a Week**
AEC-T11	AEC	पर्यावरण-अध्ययन (Environment Studies)	4.5	2	100	36 Non-CGPA S/NS	2
SANS-DCC-T12	DCC	भारतीय संस्कृति के तत्त्व, काव्य, अनुवाद एवं व्याकरण	4.5	6	150 (120+30)	36	6
द्वितीयार्द्धसत्र - SEMESTER-II							
Course Code	**Course Type**	**Course Title**	**Level**	**Credits**	**Marks (Ext.+Int.)**	**Minimum Passing Marks (%)**	**Hours in a Week**
AEC-T21	AEC	सामान्य अंग्रेज़ी/हिन्दी (General English/Hindi)	4.5	2	100	36 Non-CGPA S/NS	2
SANS-DCC-T22	DCC	प्राचीन संस्कृत साहित्य एवम् अलङ्कार	4.5	6	150 (120+30)	36	6
तृतीयार्द्धसत्र - SEMESTER-III							
Course Code	**Course Type**	**Course Title**	**Level**	**Credits**	**Marks (Ext.+Int.)**	**Minimum Passing Marks (%)**	**Hours in a Week**
SDC-T31	SDC	प्रारम्भिक संगणक (Elementary Computer)	5	2	100	36 Non-CGPA S/NS	2
SANS-DCC-T32	DCC	नाटक, छन्द, संस्कृत-साहित्येतिहास एवं व्याकरण	5	6	150 (120+30)	36	6

चतुर्थार्द्धसत्र - SEMESTER-IV							
Course Code	**Course Type**	**Course Title**	**Level**	**Credits**	**Marks (Ext.+Int.)**	**Minimum Passing Marks (%)**	**Hours in a Week**
VAC-T41	VAC	भारतीय ज्ञान-परम्परा (Indian Knowledge System)	5	2	100	36 Non-CGPA S/NS	2
SANS-DCC-T42	DCC	वैदिक साहित्य, गद्य साहित्य एवं व्याकरण	5	6	150 (120+30)	36	6

पञ्चमार्द्धसत्र - SEMESTER-V							
Course Code	**Course Type**	**Course Title**	**Level**	**Credits**	**Marks (Ext.+Int.)**	**Minimum Passing Marks (%)**	**Hours in a Week**
SDC-T51	SDC	सम्प्रेषण-कौशल (Commmunication Skills	5.5	2	100	36 Non-CGPA S/NS	2
SANS-DCC-T52	DCC	काव्य, स्मृति एवं निबन्ध	5.5	6	150 (120+30)	36	6

षष्ठार्द्धसत्र - SEMESTER-VI							
Course Code	**Course Type**	**Course Title**	**Level**	**Credits**	**Marks (Ext.+Int.)**	**Minimum Passing Marks (%)**	**Hours in a Week**
SEC-T61	SEC	Special Elective Course (like DPR, IOJ, CEE, RCC)	5.5	2	100	36 Non-CGPA S/NS	2
SANS-DCC-T62	DCC	भारतीय दर्शन, नीति एवं व्याकरण	5.5	6	150 (120+30)	36	6

शब्द-विस्तार

AEC	Ability Enhancement Course	CGPA	Cumulative Grade Point Average
SDC	Skill Development Course	S/NS	Satisfied/Not Satisfied
VAC	Value Added Course	DPR	Dissertation/Project/Field Survey
SEC	Special Elective Course	IOJ	Internship or On-Job Experience
SANS	Sanskrit	CEE	Community Engagement Experience
T	Theory	RCC	Research Credit Courses
DCC	Discipline Specific Core Course	Ext.+Ent.	External+Internal

परीक्षा एवम् अङ्क-योजना

✍ प्रत्येक DCC प्रश्नपत्र 30+120=150 अङ्क का होगा, जिसमें अर्द्धसत्र के दौरान 30 अङ्क का सतत आन्तरिक मूल्याङ्कन होगा तथा 120 अङ्क की सैद्धान्तिक अर्धसत्रान्त (End semester) परीक्षा विश्वविद्यालय द्वारा आयोज्य होगी।

✍ 30 अङ्कों के आन्तरिक मूल्याङ्कन में 20 अङ्कों का सैद्धान्तिक लिखित मूल्याङ्कन तथा 10 अङ्कों का व्यावहारिक वाचिक परीक्षण अपेक्षित है, जिसमें संगोष्ठी–पत्रवाचन–श्लोकपाठ–संस्कृतसम्भाषणकौशल–रूपकण्ठस्थीकरण–उच्चारणशुद्धि इत्यादि को सम्मिलित किया जा सकता है।

✍ परीक्षार्थी को सैद्धान्तिक, प्रायोगिक और आन्तरिक परीक्षा को उत्तीर्ण करने के लिए प्रत्येक में पृथक्–पृथक् न्यूनतम 36 प्रतिशत अङ्कार्जन करना होगा।

✍ गैर–सीजीपीए (Non-CGPA) पाठ्यक्रम मुख्यतः अभ्यासाधारित पाठ्यक्रम हैं। इनमें से प्रत्येक के लिए 2 क्रेडिट निर्धारित हैं। इनके क्रेडिट, क्रेडिट पॉइंट और ग्रेड 'गैर–सीजीपीए' पाठ्यक्रमों के तहत मार्कशीट में अलग से दर्शाए जाएँगे। कॉलेज द्वारा छात्र के संतोषजनक या असंतोषजनक (S/NS) क्रेडेंशियल्स ही केवल विश्वविद्यालय को भेजे जाएँगे।

✍ प्रत्येक प्रश्नपत्र का पाठ्यक्रम 5 अन्वितियों (इकाइयों) में विभाजित होगा।

✍ विश्वविद्यालय द्वारा आयोज्य अर्द्धसत्रान्त परीक्षा का प्रत्येक प्रश्नपत्र 3 खण्डों (अ–ब–स) में निम्नानुसार विभक्त होगा –

- खण्ड 'अ' (20 अङ्क) में कुल 10 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न। प्रत्येक प्रश्न 2 अङ्कों का होगा। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। खण्ड 'अ' इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि प्रश्न I से V बहुविकल्पात्मक प्रश्न होंगे, जबकि प्रश्न VI से X रिक्त–स्थान–पूर्तिपरक प्रश्न होंगे।
- खण्ड 'ब' (40 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प सहित) रहेगा। प्रत्येक प्रश्न 8 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को सभी 5 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 150 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।
- खण्ड 'स' (60 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक। प्रत्येक प्रश्न 20 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 400 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

प्रथमार्द्धसत्र - SEMESTER-I	
Course Code :	SANS-DCC-T12
Type of the Course :	Discipline Specific
Title of the Course :	भारतीय संस्कृति के तत्त्व, काव्य, अनुवाद एवं व्याकरण
Level of the Course :	NHEQF 4.5
Credit of the Course :	6
Delivery sub-type of the Course :	Theory 5+Tutorial 1

पाठ्यक्रमोद्देश्य :
(Course Objectives)

- हमारा वेद जिस संस्कृति को प्रथम और विश्वव्यापी तथा सर्वश्रेष्ठ संस्कृति घोषित करता है (सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा), उस भारतीय संस्कृति के प्रमुख तत्त्वों का ज्ञान छात्रों को हो, यह उद्दिष्ट है।
- रघुवंश महाकाव्य की रमणीयता को लक्षित करके कविचक्रचूड़ामणि महाकवि कालिदास को 'रघुकार' भी कहा जाता है – 'क इह रघुकारे न रमते?' रघुकार के 'रघुवंश' महाकाव्य के एक सर्ग को छात्र मूल रूप में पढ़ें।
- पाणिनि-व्याकरण विश्व का सर्वाधिक प्राचीन अथ च वैज्ञानिक और परिष्कृत व्याकरण है। उस व्याकरण के आधार पर संज्ञा-प्रकरण व सन्धि-प्रकरण का प्राथमिक व आवश्यक बोध छात्रों को हो, यह उद्देश्य है।
- प्रारम्भिक छात्रों को संस्कृत-भाषाबोध के लिए हिन्दी से संस्कृत तथा संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद का अभ्यास करवाया जाए।

अधिगम-फलितांश :
(Learning Outcomes)

- इस अध्ययन के पश्चात् छात्रों को भारतीय संस्कृति की प्राचीनता, व्यापकता, उदात्तता का बोध तो होगा ही, साथ ही इस संस्कृति के प्रति आस्था दृढीभूत होगी और भारत-भक्ति का भाव प्रबल होगा।
- कालिदास के 'रघुवंश' के द्वितीय सर्ग के अध्ययन से गुरुभक्ति, गोसेवा, प्रकृति-प्रेम, सत्य, अहिंसा, दया, त्याग इत्यादि मूल्यों का बोध होगा और साथ ही छात्र यह भी समझ सकेंगे कि कालिदास को उपमाओं के लिए क्यों जाना जाता है – 'उपमा कालिदासस्य।'
- पाणिनि-सूत्रों में पदे-पदे प्रयुज्यमान नाना संज्ञाओं को जाने विना व्याकरणाध्ययन संभव नहीं। इस स्तर पर संज्ञा-प्रकरण का अध्ययन कर लेने पर आगे के अध्ययन में छात्र की निर्बाध गति हो सकेगी।
- सन्धि-प्रकरण के सम्यक् अध्ययन के पश्चात् संस्कृत वाक्यों में पदच्छेदादि करना सरल हो जाने से वाक्यार्थावबोध सरलतया हो सकेगा।
- प्रमुख शब्दरूपों व धातुरूपों के ज्ञान से संस्कृत-व्यवहार में रुचि उत्पन्न होगी।

विस्तृत पाठ्यक्रम

(Detailed Syllabus)

SANS-DCC-T12

भारतीय संस्कृति के तत्त्व, काव्य, अनुवाद एवं व्याकरण

इकाई - 1. भारतीय संस्कृति के तत्त्व (वैदिक काल से सातवीं शताब्दी तक) –

(क) भारतीय संस्कृति : पृष्ठभूमि एवं विशेषताएँ।

(ख) धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति।

(ग) वर्ण, आश्रम एवं संस्कार (विवाहों के प्रकार सहित)।

(घ) त्रिविध ऋण एवं पञ्च महायज्ञ।

(ङ) शिक्षा।

(च) भारतीय संस्कृति का मानव-कल्याण में योगदान।

इकाई - 2. रघुवंश (कालिदास) द्वितीय सर्ग।

(अनुवाद, व्याख्या तथा सामान्य प्रश्न)

इकाई - 3. व्याकरण –

(क) लघुसिद्धान्तकौमुदी (वरदराजाचार्य) से संज्ञा-प्रकरण – सूत्रों की सोदाहरण संक्षिप्त व्याख्या।

(ख) रचनानुवादकौमुदी (डॉ कपिलदेव द्विवेदी) अच्सन्धि, हल्सन्धि तथा विसर्गसन्धि प्रकरण के सूत्र।

(केवल रचनानुवादकौमुदी में प्रदत्त सूत्रों की सोदाहरण व्याख्या तथा प्रदत्त उदाहरणों में सूत्र-निर्देशपुरस्सर सन्धि करना, सन्धि-विच्छेद करना ही अपेक्षित है।)

इकाई - 4. अनुवाद –

(क) रचनानुवादकौमुदी (अभ्यास १ से २५) के अनुसार हिन्दी-वाक्यों का संस्कृतानुवाद।

(ख) संस्कृत-वाक्यों अथवा संस्कृत-गद्यखण्ड का हिन्दी अर्थावबोध।

इकाई - 5. शब्दरूप व धातुरूप कण्ठस्थीकरण –

(क) शब्दरूप – राम, सर्व, हरि, पति, गुरु, पितृ, मातृ, दातृ, रमा, मति, नदी, धेनु, ज्ञान, जगत्, नामन्, आत्मन्, युवन्, राजन्, विद्वस्, वाच्, दिश्, तद्, एतद्, किम्, अस्मद्, युष्मद्, इदम्, एक से शतम् तक संख्यावाची शब्द। (मात्र रूप-ज्ञान अपेक्षित।)

(ख) धातुरूप –

(i) भू एवं सेव् धातु के दस लकारों में रूप।

(ii) पठ्, पच्, गम्, दृश्, सेव्, अद्, हन्, दा, दिव्, तुद्, रुध्, तन्, ज्ञा, चुर् – इन धातुओं के मात्र लँट्, लृँट्, लोँट्, लँङ्, विधिलिँङ् लकारों में रूप प्रष्टव्य।

परीक्षा एवं मूल्याङ्कन-योजना

- परीक्षा-प्रश्नपत्र 03 घण्टे की कालावधि का होगा।
- कुल मूल्याङ्कन 150 अङ्कभार का रहेगा, जिसमें 120 अङ्क की बाह्य परीक्षा होगी तथा 30 अङ्क का आन्तरिक मूल्याङ्कन होगा।
- 120 अङ्कों की उपर्युक्त परीक्षा अर्द्धसत्रान्त (At the end of the semester) में होगी।
- विश्वविद्यालय द्वारा आयोज्य इस अर्द्धसत्रान्त परीक्षा का प्रत्येक प्रश्नपत्र 3 खण्डों (अ-ब-स) में निम्नानुसार विभक्त होगा –
  - खण्ड 'अ' (20 अङ्क) में कुल 10 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न। प्रत्येक प्रश्न 2 अङ्कों का होगा। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। खण्ड 'अ' इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि प्रश्न I से V बहुविकल्पात्मक प्रश्न होंगे, जबकि प्रश्न VI से X रिक्त-स्थान-पूर्तिपरक प्रश्न होंगे।
  - खण्ड 'ब' (40 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प सहित) रहेगा। प्रत्येक प्रश्न 8 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को सभी 5 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 150 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।
  - खण्ड 'स' (60 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक। प्रत्येक प्रश्न 20 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 400 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

परीक्षकों हेतु सामान्य निर्देश :

1. प्रश्नपत्र संस्कृत माध्यम से बनाया जाए, किन्तु जिन प्रश्नों में भाषाविशेष का निर्देश न हो, उन प्रश्नों के उत्तर संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेज़ी में से किसी भी भाषा-माध्यम से दिये जा सकते हैं।
2. परीक्षार्थी प्रत्येक प्रश्न के सभी भागों का उत्तर निरन्तर लिखें।
3. प्रश्नपत्र में कुछ न कुछ परिवर्तन होता रहता है, अतः पूर्ववर्ती परीक्षा के प्रश्नपत्र को आदर्श न मानें।

पाठ्य एवं सहायक पुस्तकें :

1. भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्व – डॉ श्रीकृष्ण ओझा, आदर्श प्रकाशन, जयपुर।

2. भारत की प्राचीन संस्कृति – डॉ रामजी उपाध्याय।
3. भारतीय संस्कृति और कला – वाचस्पति गैरोला।
4. संस्कृति के चार अध्याय – रामधारी सिंह दिनकर।
5. भारतीय संस्कृति – दामोदर सातवलेकर।
6. रघुवंश (द्वितीय सर्ग) – डॉ जगन्नारायण पाण्डेय, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर।
7. रघुवंश (द्वितीय सर्ग) – धारादत्त मिश्र, मोतीलाल बनारसीदास।
8. रघुवंश (द्वितीय सर्ग) – ब्रह्मशंकर मिश्र, चौखम्बा संस्कृत संस्थान।
9. लघुसिद्धान्तकौमुदी – भीमसेन शास्त्री, भैमी प्रकाशन, दिल्ली।
10. लघुसिद्धान्तकौमुदी – डॉ रामविलास चौधरी, मोतीलाल बनारसीदास।
11. लघुसिद्धान्तकौमुदी – डॉ सुरेन्द्र देव स्नातक, चौखम्बा पब्लिशर्स, वाराणसी।
12. लघुसिद्धान्तकौमुदी – डॉ महेश सिंह कुशवाहा।
13. लघुसिद्धान्तकौमुदी – श्री धरानन्द शास्त्री।
14. रचनानुवाद कौमुदी – डॉ कपिल देव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
15. अनुवाद चन्द्रिका – श्री चक्रधर हंस नौटियाल, मोतीलाल बनारसीदास।

वैद्युत-ग्रन्थाः (e-books)

1. भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्व – https://ia801900.us.archive.org/32/items/in.ernet.dli.2015.403988/2015.403988.Bhartiya-Sanskriti.pdf
2. रघुवंश (द्वितीय सर्ग) – https://sanskritdocuments-org.translate.goog/sites/giirvaani/giirvaani/rv/sargas/02_rv.htm?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr_pto=tc
3. रचनानुवादकौमुदी (डॉ कपिलदेव द्विवेदी) – https://ia801406.us.archive.org/32/items/in.ernet.dli.2015.545725/2015.545725.Rachnanuvadh-Kumodi.pdf
4. लघुसिद्धान्तकौमुदी (संज्ञा-प्रकरण) – https://www.sbsscollegebegusarai.com/course_mterials/saj128.pdf

द्वितीयार्द्धसत्र - SEMESTER-II	
Course Code :	SANS-DCC-T22
Type of the Course :	Discipline Specific
Title of the Course :	प्राचीन संस्कृत साहित्य एवम् अलङ्कार
Level of the Course :	NHEQF 4.5
Credit of the Course :	6
Delivery sub-type of the Course :	Theory 5+Tutorial 1

पाठ्यक्रमोद्देश्य :

(Course Objectives)

- प्राचीन संस्कृत साहित्य की एक संक्षिप्त झलक दिखलाना ही यहाँ उद्दिष्ट है।
- काव्य की समस्त विधाओं के मध्य (दृश्य और श्रव्य होने से) सर्वाधिक सुन्दर विधा नाट्य को माना गया है – 'काव्येषु नाटकं रम्यम्।' जिस नाटककार 'भास' को कविता-कामिनी का हास कहा गया है (भासो हासः) और महाकवि कालिदास ने भी श्रद्धापूर्वक जिसका प्रथम-स्मरण किया है (प्रथितयशसां भास-सौमिल्ल-कविपुत्रादीनां प्रबन्धानतिक्रम्य वर्तमानकवेः कालिदासस्य क्रियायां कथं परिषदोऽस्याः बहुमानः स्यात्!), उस महान् नाटककार के नाटक 'स्वप्नवासवदत्तम्' का रसास्वादन संस्कृतच्छात्रों को अवश्यमेव करना चाहिए।
- वाल्मीकि लौकिक संस्कृत के आदि कवि हैं और उनकी कृति रामायण विश्व का प्रथम काव्य है, जो अनेक परवर्ती काव्यों का उपजीव्य काव्य है; अतः ऐसे काव्य से छात्र परिचित हों।
- विश्व कथा-साहित्य में नारायण-पण्डित विरचित हितोपदेश अद्वितीय रचना है। इसके कुछ अंश से परिचय करवाना इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य है।
- कतिपय बहुधा प्रयुक्त काव्यालङ्कारों का ज्ञान करवाना भी यहाँ अभीष्ट है।
- ऐसा कौन होगा जिसने मनुस्मृति का नाम न सुना हो? किन्तु उसके अन्तर्गत विषय-तत्त्व से प्रायः लोग अनभिज्ञ हैं। उसके मूल स्वरूप का आंशिक साक्षात्कार भी यहाँ लक्षित है।

अधिगम-फलितांश :

(Learning Outcomes)

- इस पाठ्यक्रम के अधीती छात्र प्राचीन संस्कृत साहित्य की अनेक विधाओं (पद्य, गद्य, नाट्यादि) का परिचय एक ही स्थान पर प्राप्त कर सकेंगे।
- छात्र न केवल कथा, नाट्यादि का आस्वादन ही करेंगे, बल्कि इन प्राचीन काव्यों के अध्ययन के माध्यम से वे तत्कालीन समाज, संस्कृति, परम्परा, भाषा इत्यादि का भी ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

- जिस हितोपदेश का विश्व की अधिकांश प्रमुख भाषाओं में अनुवाद हुआ है, यहाँ छात्र न केवल उस हितोपदेश के मूल संस्कृत-पाठ से रू-ब-रू होंगे, अपितु उसकी कुछ कथाओं के द्वारा नैतिक शिक्षा भी ग्रहण करेंगे।
- जिस मनुस्मृति को लेकर अनेक प्रकार की भ्रान्तियाँ वर्तमान समाज में कुछ अज्ञानियों के द्वारा फैलाई जाती हैं, उसी मनुस्मृति में वस्तुतः वर्ण, आश्रम, धर्म, संस्कार, ब्रह्मचारियों के आचरण, दैनिक चर्या, कर्त्तव्याकर्त्तव्य इत्यादि का कितना सुन्दर वर्णन है, यह उसके द्वितीय अध्याय के अध्ययन से छात्र जान सकेंगे।
- कतिपय मुख्य शब्दालङ्कारों व अर्थालङ्कारों का भी लक्षणोदाहरणपुरस्सर बोध छात्रों को होगा।

विस्तृत पाठ्यक्रम

(Detailed Syllabus)

SANS-DCC-T22

प्राचीन संस्कृत साहित्य एवम् अलङ्कार

इकाई - 1. हितोपदेश – मित्रलाभ (आद्य पाँच कथाएँ, अर्थात् 'सिद्धिः साध्ये सतामस्तु' से लेकर 'इत्युक्त्वा चित्रग्रीवोपाख्यानं वर्णितवान्' तक का अंश पठनीय) – गद्य एवं पद्य का अनुवाद और सामान्य प्रश्न।

इकाई - 2. वाल्मीकि-रामायण (बालकाण्ड - प्रथम सर्ग) – अनुवाद और सामान्य प्रश्न।

इकाई - 3. मनुस्मृति (द्वितीयाध्याय में पद्य क्र.1 से150) – व्याख्या एवं सामान्य प्रश्न।

इकाई - 4. स्वप्नवासवदत्तम् (भासकृत नाटक) – अनुवाद और सामान्य प्रश्न।

इकाई - 5. अलङ्कार – काव्यदीपिका (अष्टम शिखा) से निम्नलिखित अलङ्कार लक्षणोदाहरण सहित निर्धारित हैं – अनुप्रास, यमक, श्लेष, उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, समासोक्ति, निदर्शना, दृष्टान्त, दीपक, व्यतिरेक, विभावना, विशेषोक्ति, अर्थान्तरन्यास, भ्रान्तिमान् और संदेह।

परीक्षा एवं मूल्याङ्कन-योजना

- परीक्षा-प्रश्नपत्र 03 घण्टे की कालावधि का होगा।
- कुल मूल्याङ्कन 150 अङ्कभार का रहेगा, जिसमें 120 अङ्क की बाह्य परीक्षा होगी तथा 30 अङ्क का आन्तरिक मूल्याङ्कन होगा।
- 120 अङ्कों की उपर्युक्त परीक्षा अर्द्धसत्रान्त (At the end of the semester) में होगी।

- विश्वविद्यालय द्वारा आयोज्य इस अर्द्धसत्रान्त परीक्षा का प्रत्येक प्रश्नपत्र 3 खण्डों (अ-ब-स) में निम्नानुसार विभक्त होगा –

  - खण्ड 'अ' (20 अङ्क) में कुल 10 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न। प्रत्येक प्रश्न 2 अङ्कों का होगा। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। खण्ड 'अ' इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि प्रश्न I से V बहुविकल्पात्मक प्रश्न होंगे, जबकि प्रश्न VI से X रिक्त-स्थान-पूर्तिपरक प्रश्न होंगे।

  - खण्ड 'ब' (40 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प सहित) रहेगा। प्रत्येक प्रश्न 8 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को सभी 5 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 150 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

  - खण्ड 'स' (60 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक। प्रत्येक प्रश्न 20 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 400 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

परीक्षकों हेतु सामान्य निर्देश :

1. प्रश्नपत्र संस्कृत माध्यम से बनाया जाए, किन्तु जिन प्रश्नों में भाषाविशेष का निर्देश न हो, उन प्रश्नों के उत्तर संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेज़ी में से किसी भी भाषा-माध्यम से दिये जा सकते हैं।
2. परीक्षार्थी प्रत्येक प्रश्न के सभी भागों का उत्तर निरन्तर लिखें।
3. प्रश्नपत्र में कुछ न कुछ परिवर्तन होता रहता है, अतः पूर्ववर्ती परीक्षा के प्रश्नपत्र को आदर्श न मानें।

पाठ्य एवं सहायक पुस्तकें :

1. हितोपदेश (मित्रलाभ) – आ. शेषराज शर्मा, चौखम्बा प्रकाशन।
2. हितोपदेश – आ. शिवप्रसाद द्विवेदी, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली।
3. हितोपदेश – डॉ भवानी शंकर शर्मा।

4. वाल्मीकि रामायण – गीताप्रेस गोरखपुर।

5. वाल्मीकि रामायण (बालकाण्ड, प्रथम सर्ग) – श्यामलाल शर्मा, अभिषेक प्रकाशन, जयपुर।

6. मनुस्मृति (द्वितीयाध्याय) – डॉ कमल नयन शर्मा, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर।

7. मनुस्मृति (द्वितीयाध्याय) – गीताप्रेस गोरखपुर।

8. मनुस्मृति (द्वितीयाध्याय) – हरगोविन्द शास्त्री, चौखम्बा संस्कृत संस्थान।

9. स्वप्नवासवदत्तम् (भास) – पं तारिणीश झा, रामनारायणलाल बेनीमाधव,प्रयागराज।

10. स्वप्नवासवदत्तम् (भास) – आ. जगदीश प्रसाद पाण्डेय, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली।

11. स्वप्नवासवदत्तम् (भास) – डॉ रूपनारायण त्रिपाठी, हंसा प्रकाशन, जयपुर।

12. स्वप्नवासवदत्तम् (भास) – डॉ श्रीकृष्ण ओझा, हंसा प्रकाशन, जयपुर।

13. काव्यदीपिका (अष्टम शिखा) – श्री कृष्णमणि त्रिपाठी, चौखम्बा सुरभारती।

14. अलंकारामोद – डॉ महाप्रभु लाल गोस्वामी, चौखम्बा संस्कृत संस्थान।

15. अलंकारप्रकाश – डॉ जयमन्त मिश्र, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।

16. सद्वृत्तालङ्कार – डॉ हिन्द केसरी, पंचशील प्रकाशन, जयपुर।

17. धर्मशास्त्र का इतिहास – डॉ पी वी काणे।

वैद्युत-ग्रन्थाः (e-books) :

1. हितोपदेश (मित्रलाभ) – https://ia803206.us.archive.org/17/items/Bhrq_hitopadesh-mitra-labh-by-pt.-shri-vishwanath-sharma-motilal-banarasi-das-delhi/Hitopadesh%20Mitra%20Labh%20by%20Pt.%20Shri%20Vishwanath%20Sharma%20-%20Motilal%20Banarasi%20Das%2C%20Delhi.

2. वाल्मीकि-रामायण (बालकाण्ड, सर्ग-१) – https://www.eshiksha.mp.gov.in/mpdhe/pluginfile.php/6461/mod_resource/content/1/E-%20text%201.2%20ramayan%20vyakhya%20part%20-%201.pdf
3. वाल्मीकि-रामायण (बालकाण्ड, सर्ग-१) – https://sanskritdocuments-org.translate.goog/sites/valmikiramayan/baala/sarga1/balaroman1.htm?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr_pto=tc
4. मनुस्मृति - द्वितीयाध्याय (मूलपाठमात्रम्) – https://www-wisdomlib-org.translate.goog/hinduism/book/manu-smriti-sanskrit/d/doc1221359.html?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr_pto=tc
5. मनुस्मृति - द्वितीयाध्याय (हिन्दी-अंग्रेज़ी भाषानुवादमात्रम्) – https://hindutv.wordpress.com/2017/05/18/glimpses-in-indian-history-after-maha-bharat-महाभारत-के-बाद-भारत/
6. स्वप्नवासवदत्तम् (सामान्य अध्ययन – पात्रपरिचय, कथासार एवं समीक्षा) – https://www.eshiksha.mp.gov.in/mpdhe/pluginfile.php/13246/mod_resource/content/1/E-Text%204.2%20Swapnvasavdattam%20-%20Patra-Parichya%2C%20Kathasar%20Evam%20Sameeksha%20.pdf
7. स्वप्नवासवदत्तम् (हिन्दी-अंग्रेज़ी टीका – तारिणीश झा) – https://ia801402.us.archive.org/21/items/in.ernet.dli.2015.406448/2015.406448.Swapanvasvaduttam.pdf
8. काव्यदीपिका (सम्पूर्ण) – https://mugberiagangadharmahavidyalaya.ac.in/Files/1707911410Kavya%20Dipika.pdf {किन्तु इसमें मात्र अष्टमशिखा (पृ. ११६-१५५) ही पठनीय हैं और उसमें भी केवल निर्धारित अलङ्कारों का ही अध्ययन अपेक्षित है।}

तृतीयार्द्धसत्र - SEMESTER-III	
Course Code :	SANS-DCC-T32
Type of the Course :	Discipline Specific
Title of the Course :	नाटक, छन्द, संस्कृत-साहित्येतिहास एवं व्याकरण
Level of the Course :	NHEQF 5
Credit of the Course :	6
Delivery sub-type of the Course :	Theory 5, Tutorial 1

पाठ्यक्रमोद्देश्य :
(Course Objectives)

- काव्य की समस्त विधाओं के मध्य (दृश्य और श्रव्य होने से) सर्वाधिक सुन्दर विधा नाट्य को माना गया है और नाटकों में भी सुन्दरतम है कालिदास का 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' – 'काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला।' छात्र इस विश्वप्रसिद्ध रचना से वञ्चित न रहें, इस उद्देश्य से इसे रखना अपरिहार्य है।
- संस्कृत में पद्य काव्य छन्दोबद्ध (Metrical) ही होता है, छन्दोमुक्त नहीं, अतः प्रमुख मात्रिक तथा वर्णिक छन्दों (Metre) के अपेक्षित ज्ञान के उद्देश्य से शाकुन्तल नाटक में प्रयुक्त छन्दों को पाठ्यक्रम में रखा गया है।
- भाषा में प्रवेश और गति के लिए सामान्य व्याकरणबोध करवाने के प्रयोजन से प्रमुख कृत्, तद्धित और स्त्री प्रत्ययों को रखा गया है।
- छात्रों को संस्कृत साहित्य की लम्बी परम्परा का बोध करवाने के उद्देश्य से संस्कृत साहित्य के इतिहास में से कुछ बिन्दुओं का सामान्य अध्ययन अपेक्षित है।

अधिगम-फलितांश :
(Learning Outcomes)

- छात्र न केवल कालिदास जैसे रससिद्ध महाकवि के विश्वविश्रुत नाटक 'शाकुन्तल' का रसास्वादन कर सकेंगे, अपितु इस नाटक के माध्यम से वे कालिदास-कालीन भारत की सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक स्थिति से भी अवगत हो सकेंगे।
- आर्यादि प्रमुख मात्रिक छन्दों तथा अनुष्टुप् आदि वर्णिक छन्दों का लक्षणोदाहरणपूर्वक बोध प्राप्त करते हुए छात्र छन्दों के सस्वर पाठ करने का कौशल भी विकसित कर सकेंगे। ।
- छात्र कृत्तद्धितस्त्री-प्रत्ययों के बोध से संस्कृत-वाक्य-रचना में समर्थ होंगे।
- संस्कृत साहित्य के इतिहास के अध्ययन से छात्र विभिन्न कालखण्डों में विभिन्न कवियों द्वारा रचित नाना विधाओं के विपुल संस्कृत काव्यों का सामान्य परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

विस्तृत पाठ्यक्रम

(Detailed Syllabus)

SANS-DCC-T32

नाटक, छन्द, संस्कृत-साहित्येतिहास एवं व्याकरण

इकाई - 1. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (कालिदास) – 1 से 4 अङ्क।

इकाई - 2. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (कालिदास) – 5 से 7 अङ्क।

इकाई - 3. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में प्रयुक्त अधोलिखित छन्दों का ज्ञान (लक्षणोदाहरण सहित) –

1. अनुष्टुप् (श्लोक) 2. आर्या जाति 3. इन्द्रवज्रा 4. उपजाति 5. द्रुतविलम्बित
6. पुष्पिताग्रा 7. मन्दाक्रान्ता 8. मालिनी 9. वंशस्थ 10. वसन्ततिलका
11. शार्दूलविक्रीडितम् 12. शिखरिणी 13. स्रग्धरा

इकाई - 4. लघुसिद्धान्तकौमुदी – प्रमुख कृत्, तद्धित एवं स्त्री प्रत्यय –

(i) कृत् प्रत्यय प्रकरण से निर्धारित प्रत्यय – तव्यत्, अनीयर्, यत्, क्यप्, ण्यत्, ण्वुल्, तृच्, क्त, क्तवतु, क्त्वा, ल्यप्, ल्युट्, शतृँ, शानच्, तुमुँन्।
(इन प्रत्ययों के विधायक सूत्रों का सोदाहरण अर्थज्ञान अपेक्षित है।)

(ii) तद्धित प्रत्यय प्रकरण – मतुँप्, इन्, ठक्, त्व, तल्।
(इन प्रत्ययों के विधायक सूत्रों का सोदाहरण अर्थज्ञान अपेक्षित है।)

(iii) स्त्री प्रत्यय प्रकरण – 1. अजाद्यतष्टाप् 2. उगितश्च 3. टिड्ढाणञ् –० 4. वयसि प्रथमे 5. पुंयोगादाख्यायाम् 6. शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन् 7. स्वाङ्गाच्चोपसर्जनाद् 8. ऊङुतः 9. यूनस्तिः
(इन सूत्रों का सोदाहरण अर्थज्ञान अपेक्षित।)

इकाई - 5. लौकिक संस्कृत साहित्य का इतिहास –

(क) वीर काव्य

(ख) काव्य (ऐतिहासिक काव्यों सहित)

(ग) गीतिकाव्य

(घ) गद्य काव्य

(ङ) नाट्य साहित्य

(च) कथा साहित्य

परीक्षा एवं मूल्याङ्कन-योजना

- परीक्षा-प्रश्नपत्र 03 घण्टे की कालावधि का होगा।
- कुल मूल्याङ्कन 150 अङ्कभार का रहेगा, जिसमें 120 अङ्क की बाह्य परीक्षा होगी तथा 30 अङ्क का आन्तरिक मूल्याङ्कन होगा।
- 120 अङ्कों की उपर्युक्त परीक्षा अर्द्धसत्रान्त (At the end of the semester) में होगी।
- विश्वविद्यालय द्वारा आयोज्य इस अर्द्धसत्रान्त परीक्षा का प्रत्येक प्रश्नपत्र 3 खण्डों (अ-ब-स) में निम्नानुसार विभक्त होगा –

  - खण्ड 'अ' (20 अङ्क) में कुल 10 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न। प्रत्येक प्रश्न 2 अङ्कों का होगा। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। खण्ड 'अ' इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि प्रश्न I से V बहुविकल्पात्मक प्रश्न होंगे, जबकि प्रश्न VI से X रिक्त-स्थान-पूर्तिपरक प्रश्न होंगे।

  - खण्ड 'ब' (40 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प सहित) रहेगा। प्रत्येक प्रश्न 8 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को सभी 5 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 150 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

  - खण्ड 'स' (60 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक। प्रत्येक प्रश्न 20 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 400 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

परीक्षकों हेतु सामान्य निर्देश :

1. प्रश्नपत्र संस्कृत माध्यम से बनाया जाए, किन्तु जिन प्रश्नों में भाषाविशेष का निर्देश न हो, उन प्रश्नों के उत्तर संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेज़ी में से किसी भी भाषा-माध्यम से दिये जा सकते हैं।
2. परीक्षार्थी प्रत्येक प्रश्न के सभी भागों का उत्तर निरन्तर लिखें।
3. प्रश्नपत्र में कुछ न कुछ परिवर्तन होता रहता है, अतः पूर्ववर्ती परीक्षा के प्रश्नपत्र को आदर्श न मानें।

पाठ्य एवं सहायक पुस्तकें :

1. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (कालिदास) – सुबोधचन्द्र पन्त, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
2. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (कालिदास) – पं शिवप्रसाद द्विवेदी, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली।
3. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (कालिदास) – डॉ वासुदेव कृष्ण चतुर्वेदी, महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा।
4. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (कालिदास) – निरूपण विद्यालंकार, साहित्य भण्डार, मेरठ।
5. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (कालिदास) – डॉ प्रभाकर शास्त्री एवं रूप नारायण त्रिपाठी।

6. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (कालिदास) – राधावल्लभ त्रिपाठी, म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।

7. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (कालिदास) – डॉ रामशंकर त्रिपाठी।

8. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (कालिदास) – कान्तानाथ शास्त्री तैलंग, चौखम्बा प्रकाशन।

9. लघुसिद्धान्तकौमुदी (वरदराज) – भीमसेन शास्त्री, भैमी प्रकाशन, दिल्ली।

10. लघुसिद्धान्तकौमुदी (वरदराज) – श्री धरानन्द शास्त्री।

11. लघुसिद्धान्तकौमुदी – डॉ रामविलास चौधरी, मोतीलाल बनारसीदास।

12. लघुसिद्धान्तकौमुदी – डॉ सुरेन्द्र देव स्नातक, चौखम्बा पब्लिशर्स, वाराणसी।

13. लघुसिद्धान्तकौमुदी – डॉ महेश सिंह कुशवाहा।

14. छन्दोमञ्जरी (गंगादास) – डॉ ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।

15. सद्वृत्तालंकार – डॉ हिन्द केसरी, पंचशील प्रकाशन, जयपुर।

16. संस्कृत साहित्य का इतिहास – आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन, वाराणसी।

17. संस्कृतसाहित्येतिहासः – आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन, वाराणसी।

18. संस्कृत साहित्य का इतिहास – रामचन्द्र झा, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।

19. संस्कृत साहित्य की रूपरेखा – पाण्डेय एवं व्यास, साहित्य निकेतन, कानपुर।

20. संस्कृत साहित्य का इतिहास – वाचस्पति गैरोला, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।

21. संस्कृत साहित्य का समालोचनात्मक इतिहास – रामविलास चौधरी।

22. संस्कृत साहित्य का समालोचनात्मक इतिहास – डॉ रामजी उपाध्याय।

23. प्रौढ रचनानुवादकौमुदी – डॉ कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

24. वृहद् अनुवाद चन्द्रिका – चक्रधर हंस नौटियाल, मोतीलाल बनारसीदास।

वैद्युत-ग्रन्थाः (e-books)

1. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – https://ia902906.us.archive.org/4/items/in.ernet.dli.2015.485570/2015.485570.Abhigyan-Shakuntalam.pdf
2. लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या) – कृदन्त-प्रकरण पृष्ठाङ्क १-२९५ में से केवल निर्धारित कृत् प्रत्यय पठनीय हैं — https://avg-sanskrit.org/avgclasses/LSK/000-Books/LSKBmV-3-Kridanta.pdf
3. लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या) – तद्धित-प्रकरण में से केवल निर्धारित तद्धित प्रत्यय ही पठनीय हैं — https://avg-sanskrit.org/avgclasses/LSK/000-Books/LSKBmV-5-Taddhita.pdf
4. लघुसिद्धान्तकौमुदी से स्त्री-प्रत्यय – https://www.nios.ac.in/media/documents/bgp/Sr_Secondary_Hindi/Sankrit_Vyakaran_346/Book_01/346_Book1_H_L9.pdf
5. संस्कृतच्छन्दांसि– https://www.hpuniv.ac.in/hpuniv/upload/uploadfiles/files/%E0%A4%9B%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%A6%20%E0%A4%8F%E0%A4%B5%E0%A4%82%20%E0%A4%B5%E0%A5%8D%E0%A4%AF%E0%A4%BE%E0%A4%B5%E0%A4%B9%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%BF%E0%A4%95%20%E0%A4%B8%E0%A4%82%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%95%E0%A5%83%E0%A4%A4%20AEC-%20MSKTA-305.pdf
6. संस्कृत साहित्य की रूपरेखा (पाण्डेय तथा व्यास) – https://ia801805.us.archive.org/5/items/dli.ernet.525515/525515-Sanskrit%20Sahitya%20Ki%20Rooprekha.pdf

चतुर्थार्द्धसत्र - SEMESTER-IV	
Course Code :	SANS-DCC-T42
Type of the Course :	Discipline Specific
Title of the Course :	वैदिक साहित्य, गद्य साहित्य एवं व्याकरण
Level of the Course :	NHEQF 5
Credit of the Course :	6
Delivery sub-type of the Course :	Theory 5, Tutorial 1

पाठ्यक्रमोद्देश्य :

(Course Objectives)

- इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य वेद नामक प्राचीनतम भारतीय ज्ञानकोष से छात्रों को परिचित करवाना और ईशावास्योपनिषद् नामक अतिलघु कृति के माध्यम से उपनिषद् वाङ्मय के स्वारस्य से छात्रों को प्रबुद्ध करना है।
- कवि बाणभट्ट की प्रशंसा में संस्कृत-जगत् में यह उक्ति अतीव प्रसिद्ध है कि मौलिक गद्य रचना तो केवल बाण की 'कादम्बरी' है और शेष समूचा काव्यजगत् बाणभट्ट की जूठन मात्र है – 'बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्।' ऐसी अनोखी रचना कादम्बरी के एक महत्त्वपूर्ण भाग 'शुकनासोपदेश' से छात्रों को परिचित करवाना उद्दिष्ट है।
- संस्कृत वाक्य-रचना की दृष्टि से वाच्यबोध, समास-बोध तथा कारक-बोध अपरिहार्य हैं; अतः इस विषय में छात्रों को अवबुद्ध करना है।

अधिगम-फलितांश

(Learning Outcomes)

- इस पाठ्यक्रम के अधीती छात्र वेद और उपनिषद् वाङ्मय के अगाध गाम्भीर्य एवम् उच्चता तथा उसकी समृद्ध विरासत से सुपरिचित हो पाएँगे।
- कहीं जटिल समासबहुलता वाली तो कहीं सरल चूर्णक शैली वाली कादम्बरी की भाषा-शैली से छात्रों का परिचय होगा। साथ ही, एक राजकुमार के यौवराज्याभिषेक के अवसर पर एक अनुभवी वृद्ध मन्त्री द्वारा प्रदीयमान सरस उपदेश के माध्यम से युवावस्था की दहलीज़ पर खड़े किशोरों को अनेक सीखने योग्य बातें सीखने को मिलेंगी।
- इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात् छात्र कर्तृवाच्य-कर्मवाच्य-भाववाच्य, वाच्य-परिवर्तन, समास का अर्थ व भेद, समस्तपद-निर्माण तथा समास-विग्रह, कारकादि का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

विस्तृत पाठ्यक्रम

(Detailed Syllabus)

SANS-DCC-T42

वैदिक साहित्य, गद्य साहित्य एवं व्याकरण

इकाई - 1. ऋक्सूक्त – ऋग्वेद के निम्नलिखित सूक्त अध्येतव्य हैं –

अग्नि (1.1) 2. वरुण (1.25) 3. सूर्य (1.115) 4. विष्णु (1.154)

5. इन्द्र (2.12) 6. प्रजापति (10.121) 7. संज्ञान (10.191)

(उपर्युक्त सूक्तों से केवल मन्त्र-व्याख्या प्रष्टव्य है।)

इकाई - 2. ईशावास्योपनिषद् (यजुर्वेद का 40वाँ अध्याय) – मन्त्र-व्याख्या।

इकाई - 3. कादम्बरी (शुकनासोपदेश मात्र) – गद्यांशों का हिन्दी अनुवाद और सामान्य प्रश्न।

इकाई - 4. व्याकरण

(क) वाच्य –

कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य एवं भाववाच्य।

(वाच्यों का सामान्य ज्ञान एवं वाच्य-परिवर्तन।)

(ख) समास-ज्ञान – निम्नलिखित सूत्रों के आधार पर –

1. सह सुँपा।
2. अव्ययं विभक्ति-समीप०।
3. नदीभिश्च।
4. द्वितीया श्रितातीत०।
5. तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन।
6. चतुर्थी तदर्थार्थ-बलि-हित-सुख-रक्षितैः।
7. पञ्चमी भयेन।
8. षष्ठी।
9. तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः।
10. विशेषणं विशेष्येण बहुलम्।
11. उपमानानि सामान्यवचनैः।
12. दिक्संख्ये संज्ञायाम्।
13. संख्यापूर्वो द्विगुः।
14. अनेकमन्यपदार्थे।
15. चार्थे द्वन्द्वः।
16. पिता मात्रा।

(समास-विषयक सामान्य ज्ञान, यथा – समास का अर्थ, विग्रह, समास के भेद, अव्ययीभावादि की सामान्य विशेषताएँ।)

इकाई - 5. कारक-प्रकरण – निम्नलिखित सूत्र पठनीय हैं –

1. प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा।
2. कर्तुरीप्सिततमं कर्म।
3. कर्मणि द्वितीया।
4. अकथितं च।
5. अधिशीङ्स्थासां कर्म।
6. उपान्वध्याङ्वसः।
7. अभितः-परितः-समया-निकषा-हा-प्रतियोगेऽपि।
8. अन्तरान्तरेण युक्ते।
9. साधकतमं करणम्।
10. कर्तृकरणयोस्तृतीया।
11. सहयुक्तेऽप्रधाने।
12. येनाङ्गविकारः।
13. इत्थम्भूतलक्षणे।
14. कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्।
15. चतुर्थी सम्प्रदाने।
16. रुच्यर्थानां प्रीयमाणः।
17. क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः।
18. नमःस्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषड्योगाच्च।
19. ध्रुवमपायेऽपादानम्।
20. अपादाने पञ्चमी।
21. भीत्रार्थानां भयहेतुः।
22. वारणार्थानामीप्सितः।
23. षष्ठी शेषे।
24. षष्ठी हेतु-प्रयोगे।
25. आधारोऽधिकरणम्।
26. सप्तम्यधिकरणे च।
27. यस्य च भावेन भावलक्षणम्।
28. यतश्च निर्धारणम्।

(सूत्रों की सोदाहरण सरल संक्षिप्त व्याख्या तथा वाक्यों में रेखाङ्कित पदों में प्रयुक्त विभक्ति का नामोल्लेख तथा विधायक सूत्र-लेखन।)

परीक्षा एवं मूल्याङ्कन-योजना

- परीक्षा-प्रश्नपत्र 03 घण्टे की कालावधि का होगा।
- कुल मूल्याङ्कन 150 अङ्कभार का रहेगा, जिसमें 120 अङ्क की बाह्य परीक्षा होगी तथा 30 अङ्क का आन्तरिक मूल्याङ्कन होगा।
- 120 अङ्कों की उपर्युक्त परीक्षा अर्द्धसत्रान्त (At the end of the semester) में होगी।
- विश्वविद्यालय द्वारा आयोज्य इस अर्द्धसत्रान्त परीक्षा का प्रत्येक प्रश्नपत्र 3 खण्डों (अ-ब-स) में निम्नानुसार विभक्त होगा –

- खण्ड 'अ' (20 अङ्क) में कुल 10 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न। प्रत्येक प्रश्न 2 अङ्कों का होगा। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। खण्ड 'अ' इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि प्रश्न I से V बहुविकल्पात्मक प्रश्न होंगे, जबकि प्रश्न VI से X रिक्त-स्थान-पूर्तिपरक प्रश्न होंगे।

- खण्ड 'ब' (40 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प सहित) रहेगा। प्रत्येक प्रश्न 8 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को सभी 5 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 150 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

- खण्ड 'स' (60 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक। प्रत्येक प्रश्न 20 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 400 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

परीक्षकों हेतु सामान्य निर्देश :

1. प्रश्नपत्र संस्कृत माध्यम से बनाया जाए, किन्तु जिन प्रश्नों में भाषाविशेष का निर्देश न हो, उन प्रश्नों के उत्तर संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेज़ी में से किसी भी भाषा-माध्यम से दिये जा सकते हैं।
2. परीक्षार्थी प्रत्येक प्रश्न के सभी भागों का उत्तर निरन्तर लिखें।
3. प्रश्नपत्र में कुछ न कुछ परिवर्तन होता रहता है, अतः पूर्ववर्ती परीक्षा के प्रश्नपत्र को आदर्श न मानें।

पाठ्य एवं सहायक पुस्तकें :

1. वेदचयनम् – विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
2. ऋक्सूक्तसंग्रह – डॉ हरिदत्त शास्त्री।
3. वैदिक सूक्त रत्नावली – लम्बोदर मिश्र, हंसा प्रकाशन, जयपुर।
4. वैदिक सूक्त रत्नावली – डॉ राजेन्द्र प्रसाद मिश्र, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर।
5. वैदिक सूक्त-सुधा – डॉ प्रद्युम्न द्विवेदी, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली।
6. लघुसिद्धान्तकौमुदी – भीमसेन शास्त्री, भैमी प्रकाशन, दिल्ली।

7. सिद्धान्तकौमुदी कारक-प्रकरणम् – डॉ कलानाथ झा, चौखम्बा प्रकाशन।

8. कारक-दीपिका – पं मोहनवल्लभ पन्त, रामनारायण बेणीमाधव।

9. सिद्धान्तकौमुदी कारक प्रकरण – डॉ अर्कनाथ चौधरी, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर।

10. कारक-प्रकरणम् (सि.कौ.) – डॉ रामरंग शर्मा, भारतीय विद्या प्रकाशन दिल्ली।

11. शुकनासोपदेश – आ शेषराज शर्मा, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।

12. शुकनासोपदेश – डॉ रामनारायण झा, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर।

13. शुकनासोपदेश – सुदेश नारंग, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली।

14. रचनानुवाद कौमुदी – डॉ कपिल देव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

15. प्रौढ़ रचनानुवाद कौमुदी – डॉ कपिल देव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

16. हायर संस्कृत ग्रैमर – एमआर काले

17. समास-दर्शिनी – संस्कृत भारती, दिल्ली।

18. व्याकरण चन्द्रोदय (कारक एवं समास) – चारुदेव शास्त्री।

19. संस्कृत व्याकरण – बाबूराम सक्सैना।

20. ईशावास्योपनिद् – तारिणीश झा।

वैद्युत-ग्रन्थाः (e-books)

1. ईशावास्योपनिषद् (मूलमात्रम्) – https://sanskritdocuments.org/doc_upanishhat/iisha.pdf

2. ईशावास्योपनिषद् (सानुवाद, संक्षिप्त) – http://www.shdvef.com/wp-content/uploads/2020/01/ईशोपनिषद.pdf

3. ईशावास्योपनिषद् (सानुवाद, शाङ्करभाष्य सहित) – गीताप्रेस, गोरखपुर — https://ia801403.us.archive.org/3/items/in.ernet.dli.2015.426485/2015.426485.Ishavasyopnishad1992.pdf
4. शुकनासोपदेश (सानुवाद) – https://www.egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/82226/1/Unit-20.pdf
5. शुकनासोपदेश (हिन्दी-संस्कृत टीका) – तारिणीश झा — https://ia803404.us.archive.org/27/items/shuknasopadesh-ramnarayan-lal-arun-kumar/shuknasopadesh-hindi-translation-ram-narayan-lal-arun-kumar.pdf
6. रचनानुवादकौमुदी – https://ia801406.us.archive.org/32/items/in.ernet.dli.2015.545725/2015.545725.Rachnanuvadh-Kumodi.pdf
7. लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या) – समास-प्रकरण पृष्ठाङ्क १-२५६ में से केवल निर्धारित समास-सूत्र ही पठनीय हैं — https://avg-sanskrit.org/avgclasses/LSK/000-Books/LSKBmV-4-Samas.pdf
8. लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या) – कारक-प्रकरण (विभक्त्यर्थ प्रकरण) पृष्ठाङ्क २९५-३५० में से केवल निर्धारित कारक-सूत्र ही पठनीय हैं — https://avg-sanskrit.org/avgclasses/LSK/000-Books/LSKBmV-3-Kridanta.pdf

पञ्चमार्द्धसत्र - SEMESTER-V	
Course Code :	SANS-DCC-T52
Type of the Course :	Discipline Specific
Title of the Course :	काव्य, स्मृति एवं निबन्ध
Level of the Course :	NHEQF 5.5
Credit of the Course :	6
Delivery sub-type of the Course :	Theory 5, Tutorial 1

पाठ्यक्रमोद्देश्य :

(Course Objectives)

- संस्कृत की प्राचीन समृद्ध काव्य-परम्परा में कालिदास, भारवि, दण्डी के योगदान से छात्र परिचित हों।
- याज्ञवल्क्यस्मृति का दायभाग प्रकरण, हिन्दुविधि का एक महत्त्वाधायी पक्ष है। इसमें पैतृक सम्पत्ति के विभाजन, उत्तराधिकार इत्यादि की कानूनी व्यवस्था दी गई है। आधुनिक विधिक व्यवस्था में भी न्यायालयों में जिस याज्ञवल्क्यस्मृति और उसकी 'मिताक्षरा' टीका को सम्मान प्राप्त है, उससे छात्रों का परिचय होना चाहिए।
- दो वर्ष (चार अर्द्धसत्र) पर्यन्त सामान्य व्याकरण के अध्ययन तथा सामान्य भाषानुवाद के अभ्यास के पश्चात् इस तृतीय वर्ष में छात्रों को संस्कृत निबन्ध-लेखन का अभ्यास होना चाहिए।

अधिगम-फलितांश :

(Learning Outcomes)

- अध्ययन के अनन्तर छात्र संस्कृत काव्यों की लघुत्रयी में परिगणित कुमारसम्भव महाकाव्य, वृहत्त्रयी में परिगणित किरातार्जुनीयम् महाकाव्य तथा 'धूर्तों का रोमांस' कहलाने वाले दशकुमारचरित नामक काव्य की अन्तर्वस्तु और उनके वैशिष्ट्य से परिचित हो सकेंगे।
- मनुस्मृति का अध्ययन पूर्व में कर चुके छात्र इस पाठ्यक्रम में याज्ञवल्क्यस्मृति का अध्ययन करके भारतीय विधि की दृष्टि से इनके योगदान के तुलनात्मक महत्त्व को जान सकेंगे।
- छात्र संस्कृत निबन्ध-रचना में भी अभ्यस्त होंगे।

विस्तृत पाठ्यक्रम

(Detailed Syllabus)

SANS-DCC-T52

काव्य, स्मृति एवं निबन्ध

इकाई - 1. कुमारसंभवम् (कालिदास) – प्रथम सर्ग (पद्य क्र. 1 से 30 तक) – श्लोक-व्याख्या और सामान्य प्रश्न।

(कालिदास का परिचय, कुमारसंभव की कथावस्तु, हिमालय-वर्णन, पार्वती-सौन्दर्य-वर्णन, कालिदास का उपमा-वैशिष्ट्य एवं भाषा-शैली)

इकाई - 2. किरातार्जुनीयम् (भारवि) – प्रथम सर्ग – श्लोक-व्याख्या और सामान्य प्रश्न।

(भारवि का परिचय, किरातार्जुनीय की कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, भारवि का अर्थगौरव एवं भाषाशैली)

इकाई - 3. दशकुमारचरितम् (दण्डी) – अष्टमोच्छ्वास (विश्रुतचरितम्) – गद्यांशों का भाषानुवाद और सामान्य प्रश्न।

इकाई - 4. याज्ञवल्क्य-स्मृति (व्यवहाराध्याये दायविभाग-प्रकरण मात्र) – श्लोक-व्याख्या और सामान्य प्रश्न।

इकाई - 5. संस्कृत-निबन्ध-रचना (समकालिक विषयों सहित)।

परीक्षा एवं मूल्याङ्कन-योजना

- परीक्षा-प्रश्नपत्र 03 घण्टे की कालावधि का होगा।
- कुल मूल्याङ्कन 150 अङ्कभार का रहेगा, जिसमें 120 अङ्क की बाह्य परीक्षा होगी तथा 30 अङ्क का आन्तरिक मूल्याङ्कन होगा।
- 120 अङ्कों की उपर्युक्त परीक्षा अर्द्धसत्रान्त (At the end of the semester) में होगी।
- विश्वविद्यालय द्वारा आयोज्य इस अर्द्धसत्रान्त परीक्षा का प्रत्येक प्रश्नपत्र 3 खण्डों (अ-ब-स) में निम्नानुसार विभक्त होगा –
  - खण्ड 'अ' (20 अङ्क) में कुल 10 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न। प्रत्येक प्रश्न 2 अङ्कों का होगा। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। खण्ड 'अ' इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि प्रश्न I से V बहुविकल्पात्मक प्रश्न होंगे, जबकि प्रश्न VI से X रिक्त-स्थान-पूर्तिपरक प्रश्न होंगे।

- खण्ड 'ब' (40 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प सहित) रहेगा। प्रत्येक प्रश्न 8 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को सभी 5 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 150 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।
- खण्ड 'स' (60 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक। प्रत्येक प्रश्न 20 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 400 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

परीक्षकों हेतु सामान्य निर्देश :

1. प्रश्नपत्र संस्कृत माध्यम से बनाया जाए, किन्तु जिन प्रश्नों में भाषाविशेष का निर्देश न हो, उन प्रश्नों के उत्तर संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेज़ी में से किसी भी भाषा-माध्यम से दिये जा सकते हैं।
2. परीक्षार्थी प्रत्येक प्रश्न के सभी भागों का उत्तर निरन्तर लिखें।
3. प्रश्नपत्र में कुछ न कुछ परिवर्तन होता रहता है, अतः पूर्ववर्ती परीक्षा के प्रश्नपत्र को आदर्श न मानें।

पाठ्य एवं सहायक पुस्तकें :

1. कुमारसंभवम् (प्रथमसर्ग) – तारिणीश झा, रामनारायणलाल बेनीमाधव, प्रयागराज।
2. किरातार्जुनीयम् (भारवि) प्रथमसर्ग – चौखम्बा, वाराणसी।
3. याज्ञवल्क्यस्मृति (व्यवहाराध्याय) – चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली।
4. दशकुमारचरितम् – जितेन्द्र अग्रवाल।
5. दशकुमारचरिते विश्रुतचरितम् – सुधीरकुमार गुप्त, भारती मन्दिर अनुसन्धान शाला, विश्वविद्यालयपुरी, जयपुर।
6. संस्कृत निबन्ध-शतकम् - डॉ कपिल देव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
7. प्रबन्ध रत्नाकर – डॉ रमेश चन्द्र शुक्ल।
8. निबन्ध-पारिजात – डॉ गणेशदत्त शर्मा।
9. वृहद् संस्कृत-निबन्ध-कलिका – डॉ शिवप्रसाद द्विवेदी, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली।

वैद्युत-ग्रन्थाः (e-books)

1. किरातार्जुनीय (प्रथम सर्ग) – https://www.jainfoundation.in/JAINLIBRARY/books/Kiratarjuniyama_009642_std.pdf
2. विश्रुतचरितम् – https://ia801500.us.archive.org/10/items/in.ernet.dli.2015.400863/2015.400863.Vishrutacharitam.pdf
3. संस्कृतनिबन्धशतकम् – https://www.jainfoundation.in/JAINLIBRARY/books/sanskrut_nibandh_shatakam_006194_hr6.pdf
4. प्रौढरचनानुवादकौमुदी (निबन्ध-लेखन हेतु द्रष्टव्य पृ. २८४-३२०) – https://ia600601.us.archive.org/26/items/in.ernet.dli.2015.327450/2015.327450.Praudh-rachnanuvad-Kaumudi.pdf
5. रचनानुवादकौमुदी (निबन्ध-लेखन हेतु द्रष्टव्य पृ. २२६-२४६) – https://ia801406.us.archive.org/32/items/in.ernet.dli.2015.545725/2015.545725.Rachnanuvadh-Kumodi.pdf

षष्ठार्द्धसत्र - SEMESTER-VI	
Course Code :	SANS-DCC-T62
Type of the Course :	Discipline Specific
Title of the Course :	भारतीय दर्शन, नीति एवं व्याकरण
Level of the Course :	NHEQF 5.5
Credit of the Course :	6
Delivery sub-type of the Course :	Theory 5, Tutorial 1

पाठ्यक्रमोद्देश्य :

(Course Objectives)

इस पाठ्यक्रम का उद्दिष्ट है –

- भारतीय दर्शन के विषय में सामान्य जानकारी प्रदान करना।
- भर्तृहरि के मुक्तकों के माध्यम से सन्नीति तत्त्व का संस्काराधान छात्रों में करना।
- विना तिङन्त पदों के वाक्य-रचना संभव नहीं, प्रत्येक वाक्य में एक तिङन्त पद की विद्यमानता आवश्यक है – 'एकतिङ् वाक्यम्'; अतः तिङन्त प्रक्रिया के महत्त्व को देखते हुए प्रमुख धातुओं के तिङन्त रूपों की सिद्धि करवाना।

अधिगम-फलितांश :

(Learning Outcomes)

- भारतीय दर्शन आलोचनात्मक सोच, सूक्ष्मदृष्टि, स्पष्ट लेखन और तार्किक विश्लेषण की क्षमता को विकसित करेगा। यह जीवन और जगत् के विषय में चिन्तन के लिए नये द्वार उद्घाटित करेगा।
- नीतिशतक की जीवनोपयोगी सूक्तियों को हृदयङ्गम कर लेने से वे दैनन्दिन व्यवहार में पदे-पदे सहायक सिद्ध होंगी।
- तिङ्न्त-प्रक्रिया के बोध से संस्कृतवाक्य-व्यवहार आसान हो सकेगा।

विस्तृत पाठ्यक्रम

(Detailed Syllabus)

SANS-DCC-T62

भारतीय दर्शन, नीति एवं व्याकरण

इकाई - 1. तर्कसंग्रह (अन्नम्भट्ट) – दीपिका सहित (व्याख्या और सामान्य प्रश्न)।

इकाई - 2. भारतीय दर्शन के सिद्धान्त – निम्नलिखित बिन्दु पाठ्य हैं –

- भारतीय दर्शन की विशेषताएँ।
- सांख्य दर्शन का सत्कार्यवाद।
- योगदर्शन का अष्टाङ्गयोग।
- अद्वैत दर्शन का मायावाद।
- न्याय दर्शन की प्रमाणमीमांसा।
- वैशेषिक दर्शन के सप्त पदार्थों का सामान्य ज्ञान।
- चार्वाक दर्शन की तत्त्वमीमांसा।
- बौद्ध दर्शन का क्षणिकवाद।
- जैन दर्शन का अनेकान्तवाद।

इकाई - 3. श्रीमद्भगवद्गीता (द्वितीयाध्याय) – भाषानुवाद, व्याख्या एवं सामान्य प्रश्न।

इकाई - 4. भर्तृहरि-नीतिशतकम् (निर्णय सागर) – भाषानुवाद, व्याख्या एवं सामान्य प्रश्न।

इकाई - 5. लघुसिद्धान्तकौमुदी (तिङन्त प्रकरण)

भू, एध् अद्, हु, दिव् षुञ् ,तुद्, तन्, क्री एवं चुर् धातुओं की लँट्, लृँट्, लोँट्, लँङ् तथा विधिलिँङ् लकार में रूप-सिद्धियाँ।

परीक्षा एवं मूल्याङ्कन-योजना

- परीक्षा-प्रश्नपत्र 03 घण्टे की कालावधि का होगा।
- कुल मूल्याङ्कन 150 अङ्कभार का रहेगा, जिसमें 120 अङ्क की बाह्य परीक्षा होगी तथा 30 अङ्क का आन्तरिक मूल्याङ्कन होगा।
- 120 अङ्कों की उपर्युक्त परीक्षा अर्द्धसत्रान्त (At the end of the semester) में होगी।
- विश्वविद्यालय द्वारा आयोज्य इस अर्द्धसत्रान्त परीक्षा का प्रत्येक प्रश्नपत्र 3 खण्डों (अ-ब-स) में निम्नानुसार विभक्त होगा –

– खण्ड 'अ' (20 अङ्क) में कुल 10 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न। प्रत्येक प्रश्न 2 अङ्कों का होगा। सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। खण्ड 'अ' इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि प्रश्न I से V बहुविकल्पात्मक प्रश्न होंगे, जबकि प्रश्न VI से X रिक्त-स्थान-पूर्तिपरक प्रश्न होंगे।

– खण्ड 'ब' (40 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प सहित) रहेगा। प्रत्येक प्रश्न 8 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को सभी 5 प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 150 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

– खण्ड 'स' (60 अङ्क) में 5 प्रश्न होंगे, प्रत्येक इकाई से एक। प्रत्येक प्रश्न 20 अङ्कों का होगा। परीक्षार्थी को किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। उत्तर 400 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

परीक्षकों हेतु सामान्य निर्देश :

1. प्रश्नपत्र संस्कृत माध्यम से बनाया जाए, किन्तु जिन प्रश्नों में भाषाविशेष का निर्देश न हो, उन प्रश्नों के उत्तर संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेज़ी में से किसी भी भाषा-माध्यम से दिये जा सकते हैं।
2. परीक्षार्थी प्रत्येक प्रश्न के सभी भागों का उत्तर निरन्तर लिखें।
3. प्रश्नपत्र में कुछ न कुछ परिवर्तन होता रहता है, अतः पूर्ववर्ती परीक्षा के प्रश्नपत्र को आदर्श न मानें।

पाठ्य एवं सहायक पुस्तकें :

1. तर्कसंग्रह (अन्नम्भट्ट) – डॉ दयानन्द भार्गव।
2. तर्कसंग्रह (अन्नम्भट्ट) – डॉ पङ्कज कुमार मिश्र, परिमल प्रकाशन, दिल्ली।
3. तर्कसंग्रह (अन्नम्भट्ट) – डॉ अर्कनाथ चौधरी, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर।
4. तर्कसंग्रह (अन्नम्भट्ट) – नरेन्द्र शर्मा, हंसा प्रकाशन, जयपुर।
5. तर्कसंग्रह (अन्नम्भट्ट) – पं नर्मदेश्वर तिवारी, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली।
6. तर्कसंग्रह (अन्नम्भट्ट) – पं आनन्द झा, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
7. श्रीमद्भगवद्गीता – साधक संजीवनी टीका (स्वामी रामसुखदास जी), गीताप्रेस गोरखपुर।
8. श्रीमद्भगवद्गीता – डॉ राजेन्द्र शर्मा।
9. गीता रहस्य – लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक।
10. नीतिशतकम् – डॉ कृष्णमणि त्रिपाठी, चौखम्बा प्रकाशन।

11. नीतिशतकम् – डॉ गोपाल शर्मा, हंसा प्रकाशन, जयपुर।

12. लघुसिद्धान्तकौमुदी – भीमसेन शास्त्री, भैमी प्रकाशन, दिल्ली।

13. लघुसिद्धान्तकौमुदी – डॉ केवलकृष्ण आनन्द, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।

14. लघुसिद्धान्तकौमुदी – डॉ राजधर मिश्र, जयपुर।

15. लघुसिद्धान्तकौमुदी – श्री धरानन्द शास्त्री।

16. लघुसिद्धान्तकौमुदी – महेश सिंह कुशवाह।

17. णत्वणिजन्तम् – संस्कृत भारती, दिल्ली।

18. भारतीय दर्शन – डॉ उमाशंकर शर्मा ऋषि, चौखम्बा प्रकाशन।

19. भारतीय दर्शन – जदुनाथ सिन्हा, मोतीलाल बनारसीदास।

20. भारतीय दर्शन – दत्ता एवं चटर्जी।

21. भारतीय दर्शन – उमेश मिश्र, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।

22. भारतीय दर्शन – बलदेव उपाध्याय।

23. भारतीय दर्शन की रूपरेखा – हिरियन्ना।

वैद्युत-ग्रन्थाः (e-books)

1. तर्कसंग्रह (मूलमात्रम्) – https://sanskritdocuments.org/doc_z_misc_major_works/tarka2.pdf

2. तर्कसंग्रह (हिन्दी व्याख्या सहित) – https://www.jainfoundation.in/JAINLIBRARY/books/tark_sangraha_035324_std.pdf

3. तर्कसंग्रह (भूमिका एवं हिन्दी व्याख्या सहित) – https://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/68665/1/Block-2.pdf

4. तर्कसंग्रह (विस्तृत भूमिका एवं तर्कदीपिका संस्कृतटीका सहित हिन्दी व्याख्या) – https://sambhasha.ksu.ac.in/CompLing/Tarka%20Sangraha/Tarka%20Sangraha%20Hindi%20commentary%20Dayanand%20Bhargava%20MLBD%20Alt.pdf
5. भारतीय दर्शन (दत्त एवं चटर्जी) – https://ia800602.us.archive.org/10/items/2015.319713.BharatiyaDarshan/2015.319713.Bharatiya-Darshan.pdf
6. श्रीमदभगवद्गीता (हिन्दी-अंग्रेज़ी भाषानुवादमात्र) – https://www.sanatansanskrit.in/2020/05/bhagwat-geeta-chapter-2.html
7. कवि भर्तृहरि और उनका कर्तृत्व – https://www.eshiksha.mp.gov.in/mpdhe/pluginfile.php/10177/mod_resource/content/1/E-Text_%20Final%20Nitishatkam%20part%20-1%205.3.pdf
8. नीतिशतकम् (४५ पद्यों का सान्वय संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेज़ी भाषानुवाद) – https://www.jsscacs.edu.in/sites/default/files/Department%20Files/%E0%A4%A8%E0%A5%80%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0%A4%B6%E0%A4%A4%E0%A4%95%E0%A4%AE%E0%A5%8D-1.pdf
9. नीतिशतकम् (तारिणीश झा) – https://ia601400.us.archive.org/30/items/in.ernet.dli.2015.407474/2015.407474.Neetishatakam.pdf

🌸 समाप्तम् 🌸